HISTORY (H)

B.A. – III

PART- 'A'

PAPER – Vth

HISTORY OF INDIA (1550 – 1750)

UNIT- 7th – Decline of Mugal empire.

⇒ मुगल साम्राज्य का पतन :-

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण :-

(i) प्रशासनिक तथा राजनितिक कारण ·
(ii) आर्थिक कारण :-

1526 ई० में बाबर ने मुगल साम्राज्य की नींव डाली लगभग 200 वर्षों तक भारतवर्ष में मुगलों का आधिपत्य रहा। हुमायूं के समय साम्राज्य में भयंकर संकट आया, जिससे उसे राजगद्दी छोड़कर ईरान की ओर भागना पड़ा। शासन पर शेरशाह का अधिकार हो गया, शेरशाह की मृत्यु के उपरांत बाद हुमायूँ ने अधिकार कर लिया। अकबर के समय में मुगल साम्राज्य का चरम विकास हुआ, उसने हिन्दू और मुसलमानों के मध्य सहयोग की भावना पैदा की। जहांगीर और शाहजहां के काल में धार्मिक

Page No.:
Date:

तथा राजपूत नीति में परिवर्तन हुआ, जिससे राजपूत और सीख रूठ गये। औरंगजेब की नीति ने मुगल साम्राज्य को पतन के कगार पर ला कर खड़ा करदिया।

- औरंगजेब के बाद योग्य सम्राट न होने के कारण साम्राज्य का पतन हो गया जिसके निम्न कारण है!—

→ प्रशासनिक तथा राजनीतिक कारण!.

⇒ उत्तराधिकार संबधी सुनिश्चित नियमों का अभाव!

उत्तराधिकार संबधी सुनिश्चित नियमों के अभाव से सम्राट की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी सिंहासन के लिए संघर्ष शुरु हो गया। औरंगजेब ने अपने पिता को कैद कर तथा भाइयों की हत्या करके सिंहासन प्राप्त किया था। यह परम्परा आगे भी जारी रही औरंगजेब के समय में राजकुमार मुअज्जम तथा अकबर ने बहादुरशाह के समय में आजम और काम-बक्श ने विद्रोह किया। इस प्रकार के उत्तराधिकार के लिए

तब तक चलते रहे जब तक मुगल साम्राज्य का नामोनिशान न मिट गया।

3) औरंगजेब के अयोग्य उत्तराधिकारी :-

औरंगजेब के उत्तराधिकारी अयोग्य थे - वे नाम मात्र के सम्राट थे। औरंगजेब के बाद उसका बेटा मुअज्जम बहादुरशाह के नाम से आगरा की गद्दी पर बैठा। उसमें शासनात्मक क्षमता की कमी थी यद्यपि वह हिन्दु तथा राजपूतों के प्रति उदार था परंतु ऊपर से दुर्बल तथा वृद्ध था। उसका पुत्र जहाँदारशाह भी कमजोर शासक सिद्ध हुआ। परिणामस्वरूप उसको मारकर फर्रुखसियार उसकी हत्या कर स्वयं गद्दी पर बैठ गया।

3) मुगल सरदारों में पारस्परिक द्वेष भाव :-

सम्राट की दुर्बलता का लाभ उठाकर मुगल सरदार अनेक गुटों में विभक्त हो गये थे। तूरानी, ईरानी, अफगानी तथा हिन्दुस्तानी सरदारों के अलग-अलग गुट थे। वे पारस्परिक द्वेष भाव से ग्रसित थे। प्रत्येक गुट अपना

वर्चस्व कायम करना चाहता था। उनकी गुटबन्दी तथा खींचातानी से मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया था।

⇒ मनसबदारी प्रथा में बार-बार परिवर्तन :

अकबर ने मनसबदारी प्रथा लागू की तथा औरंगजेब ने मनसबदारों की संख्या दुगुनी कर दी, पर आय में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं की। इसके अलावा मनसबदारों पर जो पाबंदियाँ थी, वे भी समाप्त कर दी गई। उनका निरीक्षण करना बंद कर दिया। औरंगजेब मरते ही वे जागीरें की मांग करने लगे ताकि उनकी आय बढ़ सके। मनसबदारों की ताकत बढ़ गई तथा वे सम्राट पर अपने रिश्तेदारों को वजीर बनाने हेतु दबाव डालने लगे। क्योंकि वजीर ही जागीरें बाँटता था। मनसबदारी प्रथा में भ्रष्टाचार हो गया था, जिससे मुगल सेना दुर्बल हो गई थी। सेना की शक्ति मुगल साम्राज्य की धुरी थी। उसकी

कमजोरी से मुगल साम्राज्य बिखर गया। अयोग्य शासक अपने साम्राज्य की रक्षा न कर सके।

To be continue.---

DR. UDAY KUMAR

DR. L. K. V. D. college Tajpur